

सं. श्रो.वि./रोहतक/191-83/57667.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. जाट इजुकेशन सोसाइटी, रोहतक, के श्रमिक श्री राज कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद निवित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अम-70/32573, दिनांक 6-11-1970 के साथ पठित सरकारी प्रधिसूचना सं. 3864-ए.ए.श्रो.(ई) अम/70/13648, दिनांक 8-5-70 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच था तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथम संबंधित मामला है :—

क्या श्री राज कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.वि./एफ.डी./283-83/57674.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं. हिन्दुस्तान वायरल लिं. प्लाट नं. 267-268, सैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री रालिका राय तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद निवित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन श्रौद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादप्रस्त या इससे सुसंगत या उससे संबंधित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री कारिका राय की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.वि./एफ.डी./294-83/57681.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल नी राय है कि मैसर्ज भारत इंडस्ट्रीज, प्लाट नं. 3 ए-154, एन.आई.टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री राम जान तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद निवित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

और चूंकि राज्यपाल हरियाणा इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-के प्रथीन गठित श्रौद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादप्रस्त या इससे सुसंगत या उससे संबंधित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री राम जान की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वे किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.वि./रोहतक/186-83/57688.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज यूनाईटेड स्टील एंड अलार्ड इंडस्ट्रीज, डी.-3, मार्डन इंडस्ट्रीजल हाउट्स, बहादुरगढ़, के श्रमिक श्री वालक राम तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद निवित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6-11-70 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 3864-ए.ए.श्रो.- (ई)- अम-70/13648, दिनांक 8-5-1970 द्वारा उक्त

अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम व्यायालाय रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला व्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला हैः—

क्या श्री वालक राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ओ.वि/रोहतक/110-83/57695.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि भैरब श्री चन्द स्टील रोलिंग मिल्ज बहादुरगढ़, के अधिकारी श्री गिर वर्मा तथा उसके प्रवन्धकों के, बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई आद्यौगिक विवाद है;

प्रौढ़कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ओद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ज्ञातियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना मं. 9641-1-भ्रम-70/32573, दिनांक 6-11-1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना मं. 3864-ए-एस.ओ.(ई)-भ्रम/70/13648, दिनांक 8-5-1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :-

क्या श्री जिव चरण की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

स. ओ. वि./रोहतक/185-83/57702.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं कपूर इलेक्ट्रोडम प्रा. नि., रोहतक रोड, एम. आई., ई. बहादुरगढ़ के थमिक श्री शिवनाथ तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद/नियित मामले में बोई ग्रीदांशिक विवाद है;

और चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को व्यापनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं (;)

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-१-थम-७०/३२५७३, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए. प.स. ग्रो. (ई) थम-७०/१३६४८, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित थम न्यायालय रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीने लिया मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है।—

क्या श्री शिव नाथ के सेवार्थों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो.वि./एफ.टी./261-83/57709.—कूँ कि राज्यपाल हस्तियाणा की राए है कि मैत्रज पेरामाउण्ट रबड इन्डस्ट्रीज 58-वी एन.ग्राइंटी, फरोदाबादके अधिक श्री वासो चौधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई प्रौद्योगिक विवाद है;

और चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांधनीय समझते हैं:

इसलिए, अब, ग्रोवोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों से प्रयोग हरी दृढ़ दृढ़ता से लाभात्मक इसके द्वारा राज्य नियन्त्रण द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के प्रयापि विभिन्न विभाग, इराजा, छोटावाद, सो तो वे निर्दिष्ट विवादप्रस्त या उससे मुर्मंगत या उससे सम्बन्धित मामले विभिन्न तथा प्रश्नाओं के मध्य व्यापारिणी के लिए निर्दिष्ट करते हैं।

क्या श्री वासो चौधरी की सेवाओं का समापन न्यायोनित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का द्वकदार है ?